भारतीय साहित्य व कला में प्रेम की अभिव्यक्ति

गुरचरण सिहं*
संजीव कुमार *

साहित्य के चार प्रमुख वेद है (1) ऋग्वेद (2) साम वेद (3) यजुर्वेद (4) अर्थवेद। जिनमें हम स्पष्ट रूप से कला व प्रेम के अर्न्तसम्बंध के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।

वेद पुराण समय के मानव की प्रतिकात्मक सोच का वर्णन है, जो कि हमारे प्रेम व शारीरिक संबंधो को हमारे रीति रिवाजों के अनुसार गहरे रूप से प्रस्तुत करते है।

"ऋग्वेद के अनुसार पृथ्वी नारी है, और बादल पुरूष है। इसके अनुसार स्वाभाविक शारीरिक सम्बन्ध को ''अजामी'' और अस्वाभाविक शारीरिक सम्बन्ध को ''जामी'' प्रकार के सम्बन्ध कहॉ जाता है, जिसमें नारी व पुरुष को मैथुनरत् दिखाया है।"[1]

अर्थवेद के अनुसार मैथुन एक शुभ प्रतीक के रूप में माना गया है।

पुराण।

1 शिव पुराण ।

"शिव पुराण में काम क्रिया को ब्रह्मानन्द के समान माना गया है। इसमें लिंग उत्पत्ति और उसकी पूजा के रीतिरिवाज को लिंग पूजन से जोड़ा गया है। वैसे तो हर पुराण में अपने अपने तरीके से शिव को अनेक प्रकार व नाम दिए गए है। जैसे **अगरा** लिंग पुराण में, **"वैलीन,** भृगुपुराण में, **करमा** पुराण में **नकुनीन,** वायु पुराण में **कणिका"** [2] और भागवत पुराण के अनुसार शाम का समय काम के लिए है। पौराणिक परम्परा के अनुसार युगल का विचार ''प्रजापति'' के उद्गम जो कि अर्धनारीश्वर के रूप में है। लिंग पुराण से पता चलता है, कि जितनी भी स्त्रियॉ है, वे प्रकृति से जन्म लेती हैं, तथा पुरुष का जन्म शिव से है, पुराणों के अनुसार "अर्धनारीश्वर रूप वाम् अंगम् (स्त्री) और दक्षिणांगम् (पुरूष) का मिलन है" जोकि सृष्टि के स्वरूप का आधार है। पुराणों के अनुसार मैथुन सृष्टि मानसिक सृष्टि के बाद आती है। शिव पुराण में बताया गया है, कि मानसिक सृष्टि के बाद मैथुन सृष्टि की उत्पत्ति होती है। महाभारत के अनुसार द्वापर युग व कलयुग (Druparayuga and Kaliyuga) के समय से मैथुन द्वारा संतान उत्पत्ति प्रारम्भ हुई।"[3]

2 नाट्य शास्त्र।

"भरत मुनि का नाट्यशास्त्र भारतीय नाट्य शास्त्र का एक प्रमुख ग्रंथ है। जिसमें उन्होंने काम को सारे भावों को उत्पन्न करने के लिए एक मात्र स्रोत बताया है। आलम्बन व उद्दीपन विभाव में उन्होंने विभिन्न भावनाओं का वर्णन किया है। भरत मुनि के अनुसार 49 प्रकार के भाव

1. R.G. Bhandarrkar, vaishnavism, (trans) पृ. स. –114.115
2. स्कन्द पुराण 154.156
3. नाट्य शास्त्र, VI.39-40

©CGCTA

हैं, जिनके द्वारा रस उत्पन्न होते है। **''रतिरस''** विपरीत लिंग के साथ शारीरिक सम्बन्ध की इच्छा को जाग्रत करता है। श्रृंगार रस के उद्‌गम् के बाद ही रति रस का आरम्भ होता है। उन्होंने प्रेम को दो प्रमुख भागों में बांटा है। पहला है, सम्भोग व दूसरा विभोग। भरत मुनि ने स्त्री के यौवन को चार भागों में विभाजित किया है। 20 वर्ष से कम, 20 से 30 वर्ष के बीच, 30 से 40 वर्ष के बीच व 40 से ऊपर। नाट्य शास्त्र के अध्याय नं. 24 में 23 प्रकार की स्त्रियों का वर्णन किया गया है। आठ प्रकार की स्त्रियों जो प्रेम में लीन है, उनका वर्णन है। वाक सज्जा जो प्रेम में लीन हो वीरहोतकम्पीता, स्वादीन भरत्रीका, जिसकी बाहों में पुरुष हो, कलाहनतरिता खण्डिता, विप्रलब्ध् प्रोर्वताथर्तिका, और प्ररोसिता भरतरीका। नाट्य शास्त्र में छाती व जांघ के रुझान को पांच प्रकार का बताया है। "अभगन् निरभगम्, प्ररकमपीता, उदवहीता, समकमपना, वलना, स्त्भना, उदवरतन्, विवरतन्"[4]। भरतमुनि ने श्रृंगार रस को स्त्री व वीर रस को पुरुष के लिए अतिरिक्त तत्त्व माना है। काम रस से सारे भावों का उद्‌गम् होता है। जैसे "धर्मकाम, अर्थकाम, काम काम और मोक्ष काम"[5] आदि इन सब भावों के अनुसार इच्छा ही आनन्द का आधार है।

नाट्य शास्त्र के अनुसार प्रेम भाव के दो प्रकार है, अभियन्त्रा और भय। जिसमें अभियन्त्रा का अधिक विवरण है।

3 अर्थशास्त्र।

"अर्थशास्त्र भारतीय राज्य की कला का सबसे पुराना व महत्त्वपूर्ण लेख है। कला का अर्थशास्त्र जो कि कौटिल्य द्वारा रचित हैं, उसे परम्परा में आदर दिया गया हैं। ऐतिहासिक परेशानियों के बावजूद अर्थशास्त्र मौर्य समाज के दिशा निर्देशक के रूप में आदर के साथ देखी जाती थी। अर्थशास्त्र के अनुसार किसी भी इन्सान को बिना नारी आज्ञा के शारीरिक सम्बन्ध बनाने की अनुमति नहीं थी। उन्होंने लिखा कि कोई भी व्यक्ति अपनी पत्नी के साथ मैथुन क्रिया को मना नहीं कर सकता था जब तक की कोई विश्वास से भरा कारण नहीं हो। परन्तु कोई व्यक्ति ऐसा करता हैं, तो उसे दण्ड दिया जाना चाहिए। इसमें कहा गया है, कि दुल्हन को कुमारी (पवित्र) होना चाहिए। उन्होंने इस शास्त्र में एक पुरुष को एक से ज्यादा स्त्री रखने पर भी सहमती जताई परन्तु विवाह द्वारा। उन्होंने अर्थशास्त्र में बिना अनुमति पत्र प्राप्त वैश्याओं का भी जिक्र किया है, जो कि पत्नियां हैं, और पर पुरूष से सम्बन्ध रखती है, एंव कहा गया कि जो भी इन्सान इस सबमें सम्मिलित होगा उसे 12 पन्ना का दण्ड दिया जाएगा। अर्थशास्त्र में वैसे

4. P.S.R.A. Rao, 1967, A Monograph on bharata's Natya-sastra,(trans) pg.- 20
5. अर्थशास्त्र, पृ. स. IV.12.87

©CGCTA

तो पूरी तरह से मैथुन क्रिया के बारे में नही बताया गया, पर हमें कहीं न कहीं उनके यौन सम्बन्धो के नियमों के बारे में पता चलता है, तथा यह भी स्पष्ट प्रमाण मिलता हैं, कि यौन सम्बंध के लिए कुछ नियम कानून था।"[6]

4 गाथा सत्पसती।

हाला द्वारा रचित ग्रंथ गाथा सत्पसती एक गद्यावली है, जिसमें प्रकृति के काफी सारे प्रेम सम्बंन्धि विचारों का वर्णन है। इसमें बदलते स्वभाव व प्रभाव तथा अनुभावों के बारे में बताया गया है। इसमें एक कामुक स्त्री किसी अन्य स्त्री से कहती है, कि इस अंधेरी रात में मेरा पति घर से दूर है, घर एकदम खाली है ओ पथिक मेरे घर पर आओ मेरी रक्षा करो।

गाथा सत्पसती में अनुभवी नाईकाएँ हैं, जो कि अपने प्रेमी और साथी के साथ पूरी तरह नियन्त्रण में हैं, इनमें से कुछ नाईकाओं के नाम हैं, "Disappointed, Passionate Sex, charged, deceived, outraged, expectant, Saparated"[133] जो आम इन्सानों में से ही आती है, और कुछ अपवित्र पत्नियां अपने पति के भाई के साथ भी प्रेमरत दिखाई गई है। युवा स्त्री मधु उत्सव में मदिरापान करती थी और उनका मानना था कि केवल प्रेम ही युवा लोगों को कुछ न सीखाने वाली चीजों को सिखाता है। वैसे हमें गाथा सत्पसती में कोई वैश्यावृती का उदाहरण नहीं मिलता, हमें गाथा सत्पसती में बहुत सारे वाक्य मिलते हैं, जिसमें प्रेम प्रक्रियाओं की बहुत सारी अवस्थाओं वासना को पूरा करने की जिज्ञासा और यौन सम्बंधों के बारे में बताया गया है।

5 कामसूत्र।

"कामसूत्र अथवा प्रेमसूत्र मुख्यतया संस्कृत साहित्य से प्रभावित है। कविता और नाटक के लिखने से पहले वात्सायन ने यह ग्रंथ लिखा। जिसमें प्रेम क्रियाएं और कला का वर्णन है। समय के साथ साथ इस ग्रंथ में संस्कृत लेखों को इतना प्रभावित किया कि उन्होंने इन्हीं के द्वारा दिए गए नियमों का विस्तार किया। यह काम सूत्र भारतीय धर्म एवं समाज के नियमों को बनाने में सहायक हो गया। इसमें लेखक ने प्रेम को एकविज्ञान के रूप में प्रस्तुत किया। मलींगा वात्सायन के काम सूत्र में 2250 श्लोक हैं, जो कि सात भागों में विभाजित है। ममरव व अन्य प्राचीन लेखक वात्सायन को प्रभावित करते हैं। जय मंगला और सूत्रवरति जिसमें से एक हैं। मुख्यतया भाग एक में पांच अध्याय है। जिसमें सामर्थ, प्रेम एवं प्रभाव का अभिमुखिकरण है। इसमें 64 प्रकार की कलाओं का विवरण है। जिसमें उस समय के नागरिकों का अध्ययन किया गया व उन नारियों का उल्लेख किया गया जो शारीरिक सम्बन्ध बनाने के लिएअनुकूल थी या नहीं थी।

दूसरा भाग पूरी तरह शारीरिक सम्बन्धो, आलिंगन व चुम्बन के प्रकारों का विवरण है।

6. Bhattacharya, 1975, History of Indian Erotic Literature, (trans) pg. 88

©CGCTA

भाग तीन में विवाहों के प्रकार बताए गए है। भाग चार में पत्नी, विधवा, दासी का वर्णन है। भाग पाँच में दूसरों की पत्नियों व उनके चरित्रो के बारे में बताया गया है। अंतिम भाग में दूसरे को अपने प्रति किस प्रकार आकर्षित किया जा सकता है, बताया गया है, इसमें कहा गया हैं, कि नगरकस (Nagarakas) और गनिकस (Ganikas) एक पढ़े लिखे इन्सान को निर्वाचित करते थे। जो उनकी 64 कलाओं का वर्णन कर सके। वात्सायन ने पूर्ण बहू (विधवा का पुनः विवाह) को कुमारियों में माना और वैश्याओं के शारीरिक सम्बन्ध को नकारा है, और न उनका साथ दिया है। दूसरे अध्याय का नाम है, समप्रयोगिका इसमें विभिन्न प्रकार के आलिंगन का वर्णन किया है।

- **कुषरानिरा** – इसमें एक दूसरे के शरीर पास–पास होने का वर्णन है।
- **तिलनतनदुलका** – दोनों एक दूसरे को जांघ पर हाथों को दबाते हुए वर्णन किया गया है।
- **वरकसधीरूधका** – इसमें स्त्री को इस प्रकार चुम्बन करते हुए वर्णन किया हैं, जैसे वह पेड़ पर चढ़ रही हो।
- **उरपागुहाना** – इसमें जंघा को दबाते हुए वर्णन किया गया है।
- **उदधरसतका** – अंधेरे में प्रेमियों का प्रेम करते हुए चलना जिसमें वे एक दूसरे के शरीर को दबाते थे।
- **स्तनलिंगाना** – इसमें छाती को दबाते हुए का वर्णन है।
- **लतावेसतितका** – इसमें स्त्री को नर के साथ बेल की भांति चिपटे हुए बताया है।
- **ललताका** – एक दूसरे के होठों को चूमते हुए आंखों को चूमते हुए, वर्णन किया है।
- **जघान्पागुहाना** – इसमें जंघा के भागों को दबाने का वर्णन है।

आलिंगन की तरह चुम्बन का भी शारीरिक संबंधों से पहले की क्रिया में एक महत्त्वपूर्ण भाग होता है। आँखें, माथा, गर्दन, छाती, जांघ, होठ, व योनि इन सबको चुम्बन का स्थान माना गया है।

कामसूत्र में साधारणतया चुम्बन चार प्रकार के बताए हैं। (1) साधारण (2) समविदा चुम्बन (3) दबाव चुम्बन (4) नाजुक चुम्बन।"

शरीर के विभिन्न भागों के लिए विभिन्न प्रकार के चुम्बनों का वर्णन किया गया है। शारीरिक सम्बन्धों में प्राहनन को महत्त्वपूर्ण माना है। प्राहनन को चार भागों में बांटा है।

- **अपहस्तिका। प्रसरताका। मस्ती। समतलका।**

उन्होंने बहुत प्रकार की शारीरिक मेलों का वर्णन किया है।

- **स्थिरता** –इसमें खड़ी अवस्था में हो जो स्तम्भ या दीवार का सहारा लिए हुए वर्णन किया गया है।

©CGCTA

- **अवलम्बीतिका** – इसमें खड़े हुए पुरुष के साथ अपना भार उसके हाथों में डाले हुए वर्णन किया गया है।
- **धैनूका** – इसमें पुरुष को अपना लिंग स्त्री की यौनी में पीछे की तरफ से डालते हुए बैल की तरह दिखाया है
- **संघटका** – इसमें दो पुरूष एक स्त्री के साथ या एक पुरूष दो स्त्री के साथ मैथुनरत् दिखाया है।
- **समरत्ा** – सामान्य शारीरिक मेल का वर्णन किया गया है।
- **पुरूषेंयता** – इस मुद्रा में स्त्री ऊपर व पुरुष नीचे बताया है।वात्सायन के अनुसार जिनको भी इन 64 कलाओं का ज्ञान हो वह किसी भी समाज का नेता बनने के लिए समर्थ है। वात्सायन के अनुसार प्रेमी मंदिर, सामाजिक उत्सव या त्यौहार पर मिल सकते हैं। इसमें बनावटी लिंग का भी वर्णन हैं, जो जिंक और लेड के बने हुए नरम व ठण्डे प्रतीत होते थे। इसका अर्थ हैं, कि हस्त मैथुन वात्सायन के समय में भी काफी प्रचलित था।

वात्सायन के अनुसार स्त्री का ज्ञान पाना (अर्जित करना) आनन्द को पाना था। कामसूत्र का ज्ञान होना इस धरती पर रहने के लिए बहुत आवश्यक था। औषधि विज्ञान अथवा मनोविज्ञान से अधिक यह ग्रन्थयौन सम्बंध के बारे में अधिक ज्ञान देता है। यह यौन जीवन के विभिन्न व बड़े आविष्कारों के प्रयोग को बढ़ावा देता है। यौन प्रेम परिपक्व प्रेम हैं, और वह पूर्णतया जीवित होने का अहसास देता है। आज के समय में यौन सम्बन्ध को अच्छे नजरिए से नहीं देखा जाता। उसकी वजह यौन सम्बन्ध नहीं बल्कि उसके प्रति भ्रांतियां है।"[17]

6 कालिदास का साहित्य।

"यदि संस्कृत साहित्य का अध्ययन किया जाए तो परम्परा में काम विषय को दर्शाते हुए सारे ग्रन्थ लिखे गए। काम ही ग्रन्थों के विभिन्न पहलुओं में सर्वत्र रहा। संस्कृत कवियों ने बिना हिचकिचाहट अपने देवी –देवताओं का वर्णन किया है। कालिदास का ग्रन्थ वात्सायन से प्रभावित था। कालिदास के ग्रन्थ का नाम है, "**श्रृंगार तिलक**" इसमें उन्होंने 23 प्रेम से भरे गद्य लिखे हैं, जिसमें उन्होंने नारी व प्रकृति का वर्णन किया। वात्सायन की तरह कालीदास भी मानते हैं, कि स्त्री कोमल ह्रदय की होती है। कोमारीय की विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए दो ग्रन्थ "कुसुमसधर्मन्" और "कुसुमसदर्शम्"[18] लिखे जिसमें दुश्यंत का शकुंतला के साथ नाजुक तरीके

7 Bhattacharya, 1975, History of Indian Erotic Literature, (trans) pg. 88

8 वात्सायन, काम सूत्र, II.2.12, V.4.41, VII.2.6,

से व्यवहार का वर्णन किया रघुवंमसा में भी ऐसा ही देखा गया है, इसमें राजा ''अग्नि वर्ग'' अपना यौवन एक सुन्दर स्त्री के साथ बिता रहे हैं। कालिदास ने अपने "मेघदूत में एक विवाहित स्त्री का वर्णन किया है। वह सुन्दर है छहरहा बदन, सुंदर दांत, लाल होंठ, पतली कमर, सुन्दर नैन, गहरी नाभी, नितंम्ब, वक्ष आदि का इस प्रकार वर्णन किया है, मानो वह इस सृष्टि में सबसे सुन्दर स्त्री हो।"[I9I] **''कुमार सम्भव''** में भी सुन्दर वक्ष–स्थलो का वर्णन हैं, इसी प्रकार का वर्णन **मरिछतीका** में भी है।"[I9I]

कालीदास ने उस स्त्री का वर्णन किया है। जो अपने प्रेमी को प्रेम पत्र लिख रही है, तथा राजा अग्निवर्ण के स्नानागार की स्त्रियों का वर्णन किया है। उनके अनुसार एक स्त्री को उसका पति चुनने का अधिकार है। वात्सायन की तरह उन्होंने भी कहा कि एक कुमारी को पहली मुलाकात में ही अपने प्रेमी के साथ बातचीत नहीं करनी चाहिए। कालीदास ने शकुंतला को उसकी सखि प्रियवदा की बातों को नकारते हुए बताया है। क्योंकि वह अपना प्रेम भाव उससे छिपाना चाहती थी। कालीदास ने भी वात्सायन की उस राय का समर्थन किया है, कि एक कुमारी को तब तक अपना बिस्तर अपने प्रेमी के साथ भोग नहीं करना चाहिए जब तक वह पूरी तरह सुंतुष्ट न हो। वात्सायन के अनुसार प्रेमी का चतुर चुनाव एक सही व सुखी जीवन व्यतीत करने के लिए आवश्यक था। इसे ही कालीदास ने अपने नायक नाईका में वर्णन किया है। कालीदास का ''तीलतदुलकम् और वरकसधिरूधदम् ये दो प्रकार के आंलिगन है, जिसमें राजा अग्निवर्ण अपनी रानी के साथ देखे गए। कुमार सम्भव में कालीदास ने प्रकृति व शिव के प्रेमालाप का वर्णन किया है, मालविकागनीमित्रम् उनके अनुसार पुरूष नारी के बिना और नारी पुरुष के बिना अधूरे है। कुमार सम्भव के एक गद्य में वर्षा की एक बूंद का वर्णन है, जो एक सुन्दर नारी पर गिरी है। वह बूंद उसकी पलकों पर फिर होंठों पर फिर वक्ष स्थल पर गिरी। अन्त में कालीदास ने पूरी तरह वात्सायन के काम सूत्र को प्रेरणा का स्रोत बनाया है, और उन्मुक्त रूप पर आधारित अपने सभी ग्रन्थों का उल्लेख किया है।"[I10I]

7 कुटटानीमाता।

"कुटटानीमाता (779-13 A.D) कश्मीरी कवि दामोदर गुप्त द्वारा रचित ग्रंथ था जो जयपद राजा का मुख्य मंत्री था और कश्मीरी था। इन्होंने प्रेम के देवता को अनेक नाम से पुकारा जैसे समर, रतिकांत, मनमथ, कन्दरप, मर, मदन, रतिरमन। दामोदर गुप्त ने काम शास्त्र को भी इन्हीं

9 मेघदुत, II.21:

10 कुंमारसम्भव, I.40.

©CGCTA

के नाम पर रखा। उनके अनुसार एक युवती तब खुश होती हैं, जब उसके बालों को सहलाया जाता है। इन्होने आलिंगन की कला का वर्णन भी किया है। अपने ग्रन्थों में इन्होंने वैश्याओं को भी नाम दिए हैं। जैसे **अनीयत, वारावद्यि, वइयोशिव, पनीयस्त्री एवं पनयवधु**। उस समय से ही वैश्यावृत्ति का आरम्भ हुआ। ग्रह मालकिन को कुटननीमाता, सम्भाली, जननी कहा जाता है। जो पुरुष वैश्याओं पर धन खर्च करता है, उसे वित्त कहा जाता था और जो नहीं करता उसे बहुजनी कहा जाता है। उन्होंने अपने ग्रन्थ में कुसुम पर्व का वर्णन किया है, जो कि काम का उत्सव है तथा इस दौरान विभिन्न प्रकार की मैथुन क्रियाओं का वर्णन किया है। उन्होंने यौन सम्बंध की तुलना युद्ध के साथ की है, समरथ एवं रतियुद्ध कहॉ। उनके अनुसार प्रेम में लीन प्रेमी सारी दुनिया को भूल जाते हैं। अन्य कवियों ने वैश्याओं के साथ सम्बंध को बुरा नहीं माना। लेकिन दामोदर के अनुसार यथार्थ आनन्द उसी में है, जो बिना किसी परेशानी के पाया जा सकता है, जो कि सिर्फ अपनी पत्नी के साथ ही सम्भव है।"[11]

8 अमरुसत्तकाम्।

"अमरुसत्तकाम् (8–9 AD) यह ग्रंथ अमरूक नामक कवि द्वारा रचित है। इसमें श्रृंगार अनुसार एक नायिका को एक सहायिका की आवश्यकता होती है, अपने नायक से मिलने के ऊपर 100 श्लोक हैं। उन्होंने नायक नायिका के प्रेम को प्रतीकात्मक रूप में दिखाया है, न कि शारीरिक सम्बंधो को। यह कवि प्रेमी युग्ल को विभिन्न भावों में वर्णित करने में सफल रहे तथा इन्होंने प्रेमी युग्ल को भाव पूर्ण रूप में वर्णित किया है। अमरूक कवि के जाने के लिए। वह प्रेमी को मिलने से पहले शरीर पर विभिन्न चिन्हों का प्रयोग करती है। इसमें एक युवा स्त्री का अपने प्रेमी से मिलने जाने की जिज्ञासा का वर्णन है। उनके अनुसार यौन सम्बन्ध बनाने से पहले ऊपरी वस्त्र खोलना चाहिए। नायिका पर अन्य श्लोक हैं, जिसमें नायिका अपने प्रेमी को देर से आने पर टोकती है। श्लोक 35 में एक ऐसे युगल का वर्णन है, जो सन्तुष्ट शारीरिक क्रिया के बाद मधुर निद्रा अवस्था में है। श्लोक 36 में एक नवविवाहिता का वर्णन है, जो अपनी प्रथम रात्री में प्रेमालाप में लीन है। श्लोक 39 में ऐसे यौन सम्बंध का प्रथम रात्री में प्रेमालाप में लीन है। श्लोक 39 में ऐसे यौन सम्बंध का वर्णन है, जो काफी समय बाद हुआ है। उसमें वह दोनों प्रेमी युग्ल बेहद संतुष्ट प्रतीत हो रहे हैं। श्लोक 40–44 में एक युवती को अपने प्रेमी को तरसाते हुए दर्शाया है। श्लोक 50–56 में नायिका अपने प्रेमी को दूर जाने से रोक रही है। और वह उस आनन्द का वर्णन करती है, जो वह इन दिनों में ले रहे हैं। श्लोक 60 बताता है, कैसे एक युग्ल इस प्रकार आलिंगनबद्ध हैं, और यौन सम्बन्ध को बनाने से पहले की क्रियाओं में लीन है। इसमें नायिका का यौन सम्बन्ध प्रेमी के साथ भी दिखाया गया है, पति के अलावा। इस समय भी पर पुरूष के साथ सम्बन्ध का वर्णन किया गया है। **श्रृंगार** को प्रेम का प्रमुख तत्त्व माना गया है।

©CGCTA

11 I. H. Sastri,1974, kalidasa kalamandiram, (Trans) p. 221

एक नायिका जब महावारी के दिनों में बड़ी बुद्धिमानी से प्रेम के लिए मना करती है, यौन प्रेम को मनुष्य जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग माना है। और जीवन को समतल रखने के लिए आवश्यक है। नायिका अपने नायक को अपनी प्रेमिका के साथ रात बिताने पर डांट रही है, कवि के अनुसार रति क्रियाएं युवावस्था के लिए आवश्यक हैं। श्लोक 77–86 में बताया है, कि जब नायक नाईका के पास सुबह अपनी प्रेमिका के साथ सोकर आता है, तो वह उसके ऊपर काफी नाराज होती है। कवि के अनुसार यौन सम्बन्ध से पहले प्रेमालाप की क्रिया काफी जरूरी है।

श्लोक 89 में बताया गया है, कि युवा युग्ल-नग्न अवस्था में मध्म लेम्प की रोशनी में लेटे हुए हैं। अमरूक कवि ने अपने ग्रन्थ में नायक के द्वारा नायिका का स्त्रीत्त्व भंग करने के बहुत सारे तरीके बताए हैं । इस प्रकार हम कह सकते हैं, कि प्राचीन कालीन दार्शनिकों को पूरा ज्ञान था भावना व प्रेम की कला का।"[12]

9 तन्त्र।

"भारत में तन्त्र की परम्परा आर्यन के पहले से थी। जिसमें पौराणिक हिन्दू संस्कृति और लोक धर्म की तकनीक समाहित थी और उत्पत्ति की पूजा प्रथा पर आधारित थी। यह परम्परा सिर्फ भारत, नेपाल, और तिब्बत में ही सीमित नही थी बल्कि दूर पूर्वी पोलिनेशिया एवं पूरे संसार में जहाँ पर भारतीय संस्कृति थी, वहाँ–वहाँ तक फैली थी। हालांकि उत्तरी अमेरिका प्रत्यक्ष रूप से तन्त्र के एक व्यवहार को प्रयोग करता है, जिसको (Quadoshka) के नाम से, जाना जाता है, जिसमें शरीर को दैवीय शक्तियों के साथ संघ बनाने के लिये एक वाहन के रूप में प्रयोग किया जाता है। हालांकि तन्त्र शब्द की भिन्न परिभाषायें हैं, कुछ लोग मानते हैं, कि तन्त्र शब्द संस्कृत से आया है, जिसका अर्थ है, ''एक दूसरे को पकडना'' तथा कुछ विद्धानो का कहना है, कि यह संस्कृत के दो शब्द का मिश्रण है, ''तनोती'' दूसरा ''त्रायती''। तनोती का अर्थ है, किसी की जागरूकता को विस्तृत करना, ''त्रायती का अर्थ है, अन्तर्त्मा से मुक्ति दिलाना। दूसरे अर्थो में तन्त्र एक धर्म पुस्तक है, जिसके द्वारा ज्ञान की रोशनी को फैलाया जाता है। हालांकि हिन्दू शास्त्र के सभी आकारो को तन्त्र के रूप में सबसे अधिक गलत समझा। मुख्यतया इसकी विषय वस्तु के कामुक विचार के कारण प्राय इसकी परिभाषा और तकनीक प्रथम संस्कार के साथ रहती हैं, हालांकि तन्त्र को बारम्बार एक काले जादू के रूप में सोचा जाता है, और इसका प्रयोग करने वाले को काले जादूगर के रूप में जाना जाता है, इसके बावजूद तन्त्र कठिन नीति और अवरोधो की कल्पनाओं को पकडता है, तथा प्राचीन उत्पत्ति की आध्यात्मिक हस्त लिपि की तरह अनुवाहित करता है। यहां पर एक विश्वास बनता है, कि ब्रह्मण्ड और मनुष्य के बीच के

12 V. V. Sastari, 1950 Sri Amarukauyam,(trans) Pg. 42-50

सम्बन्ध का जो केन्द्र बनता हैं, तथा उसका मुख्य उददेश्य इन दोनो के बीच में एक पुल बनाकर आनन्द और मोक्ष प्राप्त करना है। स्त्री और पुरूष इसको मैथुन समागम के दौरान प्रदर्शित करते है, अपनी अलग होने की संवेदनाओ को भूल कर वास्तविकता में एक जुडी हुई सम्पूर्णता में अपनी सभी चेतन संवेदनाओ को सम्मिलित कर इस लक्षण का प्रदर्शन अकेले तन्त्र में ही समाहित नही था वरन इस तरह के लक्षण बेबीलोनीया में इश्तार टामज एवं बुद्धवाद में प्रजनावज्र, ईसाई धर्म में सोफिया क्रीस्टोस, मिश्र में इसिस–ओसीरीज में भी सम्मिलित है। व्रान्त्रिक का विश्वास हैं, कि ब्रह्मण्ड में इस महान ऊर्जा का स्त्रोत मैथुन है, आवेग ब्रह्मण्ड और दैवीय अनुभव है। पहले से ही इन्होंने पवित्र मैथुन और संस्कारिक समागम को बहुत अधिक महत्व दिया। उनका विश्वास था कि समागम इन ऊर्जाओं की उच्च अवस्था है, और इनका प्रयोग अध्यात्मिक उत्पत्ति और आरोग्य करने में किया जाना चाहिए। इसके बावजूद तन्त्र लिंग के विषय में नही है इसका प्रयोग कामुकता के अनुभव का मैथुन को श्रेष्ठ करने के लिए है। वैदिक का विचार कुछ भी नही और सतचित आनन्द की तरह नही, तन्त्र मनुष्य शरीर पर एक पूजा के स्पष्ट आकार की तरह विश्वास करता है। इस विश्वास के साथ कि मनुष्य को व्यवहारिक तरीके चाहिए होते है, दैवीय शक्ति को पाने के बजाय कि लक्षणीक विचारो के, यह हमें कामुकता के प्रति एक व्यवहारिक सोच की तरफ ले जाता है, जो हमें इस जानकारी की तरफ ले जाता हैं, कि शरीर के दुर्व्यवहार और उसके त्याग के बजाय एक अच्छा रास्ता है, उसको जानना। इसलिये दण्ड के द्वारा इसको अधीन करना या नकारने के बजाय तान्त्रिक इसको आध्यात्मिकता के वाहन की तरह प्रयोग करते है। ये विश्वास करते है, कि शरीर देवी का मन्दिर है, प्रायः मनुष्य एक महत्वपूर्ण वाहन है, आनन्द और मोक्ष को प्राप्त करने का। तान्त्रिक कल्पना करते है, कि शरीर एक छोटा ब्रह्मण्ड है, जो ब्रह्मण्ड को प्रदर्शित करता है और जिसके द्वारा ब्रह्माण्डीय शक्ति चलती है। तान्त्रिक सिद्धान्त के अनुसार जो कुछ भी ब्रह्माण्ड में समाहित है, वह एक स्वतन्त्र के शरीर में सम्मिलित है, और एक रास्ता है, रहस्यो को समझने का।"[13]

"रत्नासार शास्त्र जो एक मूल सूत्र है, के अनुसार ''वह जो शरीर की सच्चाई पर विश्वास करता है, वह ही ब्रह्माण्ड के सच को जान सकता है।'' इस प्रकार तान्त्रिक मैथुनता को शान्ति लाने की तरह देखते है, बजाय कि दैवीय ज्ञान में रूकावट की तरह। यह व्यवहारिक ज्ञान ईसिता देवता के व्यक्तिगत देवता एवं शक्ति के संविधान की तरफ ले जाता है, जो साधारणतया शिव और शक्ति से आकार लेता है, जो उत्पत्ति का सार प्रदर्शित करते है, इसके अलावा तान्त्रिक व्यवहार में दो प्रकार के योगा है (1) मन्त्र योगा। (2) लय योगा।"[14]

13 V. V. Sastari, op. cit, (trans), pg. 69

14 Nik Douglas, Tantra- Yoga, (trans), pg 4-6

1. मन्त्रयोगा में ध्यान मुख्य केन्द्र होता है, जिनको हम मण्डल और यन्त्र के नाम से जानते है।

2. लययोगा और कुन्डलि योगा रहस्यमयी भौतिकता के विस्तार पर केन्द्रित होती है। लय का अर्थ है, विलय हो जाना। इस योगा में तान्त्रिक अपने शरीर को दैवीय शक्ति में विलय करते है। लययोगा का एक और नाम भी है, गेंडुरी बनाना जो स्त्री ऊर्जा को प्रदर्शित करने के लिए प्रयोग होता है। शक्ति जोकि छिपे हुए भाग में ही नही होती वरन ब्रह्माण्ड के हर अणु में होती है। इस कुण्डली योगा के दौरान शर्प–शक्ति जाग्रित होती है, और सात कमल तक जाती है जिसका केन्द्र चक्र के नाम से जाना जाता है जब तक कि यह सर के थोडा ऊपर के बिन्दु तक नही पहुँचता, जोकि सांकेतिक रूप में शिव को दर्शाता है तब शक्ति और शिवा की अन्तर्ात्मा मिलती है, तब एक स्तर को जगाती है, और मुक्ति प्राप्त करती है। निर्माण और मन्दिरों का पवित्रिकरण धार्मिक और सामाजिक आचरण और जादू का व्यवहार माया योगा के नाम से जाना जाता है। सभी तान्त्रिक संस्कारो को पंचतत्वा के नाम से जाना जाता है जोकि संस्कृत शब्द पंच और तत्व से लिया गया है। इस रिवाज में पांच तत्व प्रयोग किये जाते है मद्य, मांस, मछली, मुद्रा, काम।

"यह कहा जाता था कि जब एक पुरूष अपनी पत्नी के साथ संघ बनाता है, तो इस रिवाज के अनुसार वह उसी प्रकार के मोक्ष का अनुभव करता है, जिस प्रकार का शिव और शक्ति के बीच महान संघ में मिलता है। ये विभिन्न तथ्य तान्त्रिक तन्त्र में छठी शताब्दी से ग्यारहवीं शताब्दी तक उपयोग हुए। शायद प्रत्यक्ष ब्रह्माण्डीय नीतियों के कठोर परिणामों के रुप में, तथा प्राचीन माता देवी पूजा प्रथा में दोबारा दृष्टिगोचर होता है, एवं फलता फूलता है, मैथुन के अनुमति तंत्र को और इस रूझान जोडता। तन्त्र का यह व्यवहार अपनी जडे गडाता हैं, और विस्तृत रूप से फैला बंगाल और आसाम में, केरल और कश्मीर में, जहाँ पर योनि पूजा प्रथा अथवा स्त्री जंननांग एक विस्तृत संस्कार है। हिन्दू और बोद्ध तन्त्र शास्त्र में सुन्दरता, पूर्णता, खूशबू और समरूपता के लिए इसकी पूजा होती है। इसकी उत्पन्न करने की शक्ति के कारण पूजा की जाती है।योनि एक केन्द्रीय ऊर्जा और तेज की तरह देखी जाती थी जो सन्तुष्टी और सभी सृजन को जन्म देती है। तन्त्र कला में भी अशुद्ध और अस्वस्थता की वजह से मासिक धर्म के खून को अवरोध की तरह देखा जाता था जो कि परम्परा में एक रूकावट था। जबकि योनि की पूजा में एक पवित्रता की तरह मासिक धर्म के खून को आदर दिया जाता है। तन्त्र व्यवहार शास्त्र में जैसा बताया उसकी खास ऊर्जा के लिए एक रजस्वला स्त्री को आदर दिया जाता है उस समय उसकी खासियत भिन्न होती है। उसके शरीर की लय प्रकृति की रहस्यमयी क्रियाओं के साथ सुर में होती है। तान्त्रिक के बाये हाथ मे पूजा के समय मासिक धर्म तरल एक रिवाज

©CGCTA

के भाग की तरह शराब के साथ पीया जाता है, और रजस्वला योनि की एक खास उपासना की जाती है, उसको एक होठ से छुआ जाता हैं, और चन्दन से अभिषेक किया जाता है। ज्यादातर तान्त्रिक शास्त्र अधिक कामुकता के अध्ययन के लिए बनाये जाते हैं अगामस के रूप में जिसका सम्बंध शक्ति पूजा प्रथा से है, जोकि शक्ति को संसार की माता के रूप में गौरवान्वित करता है, यहाँ पर इस प्रकार के अगामस है जो शिव और पार्वती के बीच की बातचीत के रूप में है और जो प्रसिद्ध हिन्दु तन्त्रशास्त्र है, Mahanirvana, Kularnava, Kulasara, Prapanchasara, Tantraraja, Rudra Yamla, Brahma-Yamala, Vishnu Yamala, and the Todala Tantra, जो कई रहस्यमयी व्यवहार को विस्तृत रूप से प्रकट करते है, जो कुछ शक्ति देते है, जबकि दूसरे ज्ञान और स्वतन्त्रता को प्रतिपादित करते है, इन सभी में जो योनि तन्त्र है उनमें से एक ग्यारहवीं शताब्दी का बंगाल का धार्मिक शास्त्र है। मिथुना और मैथुन समागम तान्त्रिक संस्कार का एक आवश्यक भाग है। यह योनि पूजा को समर्पित है, जो बहुत अच्छी तरह से वर्णित है, योनि पूजा और योनि तत्व के लिये तथा इस शास्त्र में नौं प्रकार की स्त्रियों का वर्णन है जोकि बारह से साठ साल की शादीशुदा व कुंवारी, जो इन संस्कारों में हिस्सा ले सकती है, कौयला तंत्र के अनुसार ''भारत में सबसे पवित्र स्थान आसाम में कामरूपा है, जहां पर देवी के जननांग गिरे विष्णु के चक्र द्वारा उसके शरीर के 51 टुकड़े होने के पश्चात्। इस पौराणिक कथा में बताया गया कि वह स्त्री माधवी के नाम से जानी जाती थी और अपनी योनि की सुन्दरता के कारण प्रसिद्ध थी, जिसकी पूजा शिवा के द्वारा की गयी। योनि तन्त्र में आठ पाताल समाहित है, जो योनि पूजा प्रथा में विस्तृत रूप से वर्णित हैं।

"हालांकि वज्रयाना पंथ में प्रत्येक स्त्रीत्व अनुभव प्रशंसा करता हैं, और आदर का आनन्द लेता है। Candamaharosana Tantra के अनुसार ''स्त्री स्वर्ग है, स्त्री धर्म है, स्त्री बुद्ध है, स्त्री संघ है, स्त्री बुद्धि की पूर्णता है, अपनी भावनाओं को मत दबाओ, उसको चुनो जिसको तुम चुन सकते हो और वह करो जो तुम चाहते हो इस तरीके से तुम देवी को खुश कर सकते हो, कोई भी सफल नहीं हो सकता, पूर्णता को प्राप्त करने में अद्विगीन प्रवृत्ति के द्वारा, परन्तु पूर्णता प्राप्त की जा सकती है, अपनी सभी इच्छाओं के द्वारा''।

10 बुद्धिष्ट साहित्यिक कार्य।– "हमें बुद्धिष्ट कार्यो के अन्दर बहुत ही कम युगल प्रेम के उदाहरण मिलते हैं। शायद श्रृंगारिक भाव अब श्रृंगारिक भाव दार्शनिक व आध्यात्मिक भाव ले चुका है। प्रसिद्ध विद्वानों ने लिखा की बुद्धिष्ट मोनस्ट्री भी यौन सम्बन्धो से पूरी तरह बची हुई नहीं थी। गौतम धर्म सूत्र के अनुसार एक लड़की अपनी शादी तक पूरी तरह कुमारी होनी

©CCCTA

चाहिए। अश्वधोसा के बुद्ध चरिता सृष्टि की पुत्री अपने भाई आनन्द के द्वारा गर्भवती हो गयी थी। यह आश्चर्यजनक बात है, बुद्ध मोनस्ट्री में पढ़ने वाले छात्र काम साहित्य का आनन्द व काम साहित्य के बारे में लिखते थे। बाद में वजरायना बिना किसी गहरीजानकारी के साहित्य जो मिश्रण था मोनस्ट्री दर्शन व श्रृंगारिक रेखाचित्रों का। बुद्धिष्ट कामसूत्र में कहा गया है, कि किसी भी स्त्री के साथ तब तक यौन सम्बन्ध नहीं बनाए जा सकते जब तक वह खुद उसमें शामिल न हो। गौतम बुद्ध का मानना था कि काम, लोभ का कारण है, तथा काम की वजह से भ्रम पैदा होता है, और भ्रम ही कारण है एक अनुशासनहीन दिमाग का।"[15]

बुद्धकालीन तंत्रा कला इस प्रकार थी:–

"प्रजानपरमीता, गृहयासमंजातंत्रा, मंजुसरी–मुला–कलपा और हेवजरा तंत्रा आदि थे। महानिर्वाण तंत्र के अनुसार मैथुन ही परमानन्द का कारण है, और जितने भी इस धरती पर प्राणी है, सभी इसकी वजह हैं, तथा जीवन का अंतिम पड़ाव मोक्ष तभी मिल सकता है, जब आप ''भोग'' करें।"[16]

©CGCTA

15 L.A. Govinda, Tibettan tantra,(trans), pg. 59-61

16 H.V. Guenther, 1952, Yuganaggha: the tantric View of Life. (trans), Pg. 101-103

ग्रंथ संदर्भ

1 R.G. Bhandarrkar, vaishnavism,

2 स्कन्द पुराण।

3 नाट्य शास्त्र।

4 P.S.R.A. Rao, 1967, A Monograph on bharata's Natya-sastra.

5 अर्थशास्त्र।

6 Bhattacharya, 1975, History of Indian Erotic Literature.

7 वात्सायन, काम सूत्र।

8 अभी शक।

9 मेघदुत।

10 कुंमारसम्भव।

11 I. H. Sastri,1974, kalidasa kalamandiram.

12 V. V. Sastari, 1950 Sri Amarukauyam.

9 Nik Douglas, Tantra- Yoga.

10 H.C. Goswami, 1928, Kamaratna tantra.

11 L.A. Govinda, Tibettan tantra.

12 H.V. Guenther, 1952, Yuganaggha: the tantric View of Life.

©CGCTA

मार्गदर्शक

(डा. गुरचरण सिहं)
सहायक प्रवक्ता
ललित कला विभाग,
कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय।

प्रश्तुतकर्त्ता

(संजीव कुमार)
सहायक प्रवक्ता
राजकिय कला महाचिद्यालय
चण्डीगढ।